# शिष्य और फल

## भारत की एक प्राचीन कथा पर आधारित

एक छोटे-से गाँव के दो बालक साथ में पदयात्रा करते हुए, वन में स्थित एक पूज्य आध्यात्मिक गुरुजी की कुटिया में पहुँचे। उस समय की परम्परानुसार, वे दोनों ब्राह्मण विद्यार्थी गुरुजी के आश्रम जा रहे थे ताकि वहाँ रहकर उनके सान्निध्य में कई वर्षों तक अध्ययन कर सकें और घर लौटने से पूर्व पुरोहित बन जाएँ।

एक दिन की पदयात्रा करने के बाद, वे दोनों बालक जिनके नाम अभय और कीर्तन थे, शनिवार को देर दोपहर में आश्रम पहुँचे। गुरुजी अपने उद्यान में बैठे थे और कुछ शिष्य उनके साथ आस-पास बैठे थे।

गुरुजी इस सिखावनी पर उपदेश दे रहे थे कि परमात्मा हर जगह है, परमात्मा हर चीज़ में है। इस सत्संग के अन्त में गुरुजी ने उन दोनों बालकों को आगे आने के लिए कहा। अभय और कीर्तन, साथ में गुरुजी के समक्ष गए और उन्हें झुककर प्रणाम किया।

जब उन्होंने सिर ऊपर उठाया तो गुरुजी ने दोनों बालकों को एक-एक पका हुआ आम दिया और मुस्कराते हुए कहा, “अब, इस फल को वहाँ खाना जहाँ तुम अकेले हो।”

बालकों ने पुनः झुककर प्रणाम किया और अपने गुरुजी का धन्यवाद किया। सावधानीपूर्वक इस अनमोल प्रसाद को ग्रहण करते हुए, वे अपनी कुटि की ओर चल पड़े जहाँ वे विश्राम करने वाले थे।

कीर्तन ने मुस्कराते हुए कहा, “अब, यहाँ तो हम अपने आम खा नहीं सकते, यहाँ तो हम एक-दूसरे के साथ हैं।”

अभय ने कहा, “तुम ठीक कह रहे हो, हम दोनों को ही इसका कोई रास्ता निकालना पड़ेगा।”

दोनों रात्रि के भोजन के लिए गए, पूरे समय इस गुत्थी को सुलझाने में लगे रहे कि आख़िर वे गुरुजी द्वारा दिए इस कार्य को कहाँ पूरा करेंगे, ऐसे कौन-से स्थान पर वे अपना-अपना आम खाएँगे जहाँ वे अकेले हों!

भोजन समाप्त होते-होते, कीर्तन के मन में एक योजना आई। उस रात्रि, जब कुटिया में सब सो गए, वह धीरे-से अपने कम्बल में से बाहर आया और अँधेरे की आड़ में, दबे पाँव दरवाज़े से बाहर निकलकर पड़ोस की कुटिया में घुस गया जहाँ उसने देख लिया था कि कोई रह नहीं रहा था। अकेले — और स्वयं को बहुत चतुर समझते हुए — कीर्तन ने अपना स्वादिष्ट, रसीला आम खा लिया।

अभय के लिए ऐसा कर पाना उतना सरल न रहा। वह अपना प्रसाद खाने हेतु ऐसे स्थान के बारे में सोच ही नहीं पाया जहाँ गुरुजी के निर्देश का पालन हो पाता — ऐसा स्थान जहाँ अन्य कोई न हो! गुरुजी की सिखावनी उसके मस्तिष्क में गूँजती रही : *परमात्मा हर जगह है; परमात्मा हर चीज़ में है।* उसने यह सिखावनी पहले भी सुनी थी, किन्तु गुरुजी के मुख से सुनने के पश्चात् वह उसके मन में एक नए तरीक़े से पैठ गई थी। क्या उस समय भगवान उसके साथ नहीं होंगे जब वह यह आम खा रहा होगा?

सच में यह एक पहेली बन गई थी। अतः अगले दिन उसने सुबह जल्दी उठकर सैर पर जाने का निर्णय लिया ताकि उहलते हुए वह इस बारे में विचार कर सके। जब वह आश्रम के सब्ज़ियों के बगीचों से गुज़रा और वन में वृक्षों के नीचे से टहलते हुए निकला तब भी गुरुजी की सिखावनी उसके बोध में बनी हुई थी। निसर्ग की निःस्तब्धता में, मृदुलता से बहती एक छोटी-सी नहर मानो कह रही थी, *मैं तुम्हारे साथ हूँ।* वृक्षों के शिखर पर पत्तियों में से सरसराती हवा मानो फुसफुसा रही हो, *मैं तुम्हारे साथ हूँ।* और शाखाओं पर बैठे और अभय के इर्द-गिर्द उड़ते पंछी मानो गा रहे हों, *मैं तुम्हारे साथ हूँ।* अभय चलता रहा, चलता रहा किन्तु उसे ऐसा स्थान कहीं न मिला जहाँ वास्तव में उसने स्वयं को अकेला महसूस किया हो। वह अत्यन्त प्रसन्न था — अपना आम हाथ में लिए, भ्रमण करते हुए। क्या यह भगवान की उपस्थिति थी जो वह अनुभव कर रहा था? अभय को लगा, ऐसा ही हो सकता है।

बाद में उस प्रातः, जब दोनों बालक अपने गुरुजी के समक्ष उनके उद्यान में गए तब कीर्तन बेहद उत्साहित था।

वह प्रणाम करके एक खिली हुई मुस्कान के साथ ऊपर उठा, उसके दोनों हाथ खुले हुए थे। उसने गुरु को बतलाया, "मैंने आपके निर्देश का पालन किया। मैंने आपका दिया प्रसाद खाने के लिए स्थान खोज निकाला और मुझे पूरा विश्वास है कि वहाँ और कोई नहीं था!"

गुरुजी ने हामी भरी और फिर उन्होंने अभय की तरफ़ देखा और पूछा, "और तुम? तुमने आम के साथ क्या किया?"

अभय निराशा से नीचे की ओर देख रहा था, वह अच्छी तरह से जानता था कि वह गुरु से मिली प्रत्यक्ष आज्ञा का पालन नहीं कर पाया था!

अभय ने कहा, "ओह गुरुजी! मैंने ऐसा स्थान खोजने का *प्रयास किया* जहाँ कोई न हो किन्तु जहाँ कहीं भी मैं गया, मुझे एक सुखद उपस्थिति की अनुभूति हुई। ऐसा कोई स्थान था ही नहीं जहाँ मुझे अकेला महसूस हुआ हो। मुझे लगा कि हो सकता है वह भगवान थे जो मेरे साथ थे। उसने एक गहरा श्वास भरा और अपने आम को आगे बढ़ाते हुए कहा, "मैंने यह फल नहीं खाया जो आपने मुझे दिया था।"

अभय यह देखकर आश्चर्यचकित हो गया कि गुरुजी मुस्करा रहे थे और उन्होंने अपना हाथ बढ़ाया और अभय के सिर पर थपथपाने लगे। गुरुजी ने मृदुलता से कहा, "पुत्र, निःसन्देह, वह परमात्मा ही थे जो तुम्हारे साथ थे। तुमने सच्चे अर्थों में इस सिखावनी को समझा है कि परमात्मा हर जगह है, सभी स्थानों पर, सभी चीज़ों में, सभी प्राणियों में है।"

कीर्तन यह सब देख रहा था, इस सिखावनी के सत्य ने जब उसके हृदय में अपनी जड़ें स्थापित कीं तो उसकी आँखें नई समझ पाकर चमक उठीं।

गुरुजी ने और भी बड़ी मुस्कान के साथ कहा, "प्रिय अभय, अब, भरपूर आनन्द के साथ इस आम का रसास्वादन करो!"

गजरा मारक्वीज़ द्वारा पुनः कथित
वेन्डा कुदुमा द्वारा चित्रित
क़वर डिज़ाइन : आरुश कास्तनेदा

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।